मुनाफे के लिए शोध का दुरुपयोग

दवा उद्योग के आलोचक बताते हैं कि दवा कंपनियां वैज्ञानिक अध्ययनों का इस्तेमाल अपनी दवा की बिक्री बढ़ाने के लिए करती हैं। इसका एक ताज़ा उदाहरण गौरतलब है।

1996 से शुरू करके मैसाचुसेट्स के बे स्टेट मेडिकल सेंटर के स्कॉट रूबेन ने कई सारे अध्ययन प्रकाशित किए हैं। ये अध्ययन इस बात को लेकर किए गए थे कि क्या दर्द निवारक दवाइयां ऑपरेशन-उपरांत होने वाले दर्द को कम करती हैं। इन दर्द निवारकों में फाइज़र कंपनी का सेलेब्रेक्स और मर्क कंपनी का वॉयोक्स शामिल था। अब पता चला है कि रूबेन के शोध पत्रों में मनगढ़ंत आंकड़े थे। इनमें से कई शोध पत्र वापिस लिए जा चुके हैं।

रोचक और चिंताजनक बात यह है कि इन अध्ययनों के लिए धन फाइज़र व मर्क कंपनियों ने ही उपलब्ध कराया था। अध्ययन तब शुरू किया गया था जब सेलेब्रेक्स और वॉयोक्स दोनों को यू.एस. खाद्य व औषधि प्रशासन की मंज़ूरी मिल चुकी थी। अध्ययन के दौरान यह देखने का प्रयास किया गया था कि विभिन्न परिस्थितियों में इन दर्द निवारकों का क्या असर होता है।

आम तौर पर इस तरह के परीक्षण बहुत छोटे पैमाने पर किए जाते हैं। इसलिए खाद्य व औषधि प्रशासन इनके आधार पर दवाइयों में नए उपयोग जोड़ने की अनुमति नहीं देता है। वास्तव में होता यह है कि मेडिकल रिप्रेज़ेंटेटिव इस तरह के शोध की जानकारी सीधे डॉक्टरों को देते रहते हैं ताकि वे इन दवाइयों का उपयोग अन्य स्थितियों में भी करने लगें। दवा कंपनियां कहती हैं कि ये अध्ययन उनके अपने उद्देश्य से किए जा रहे हैं ताकि आगे चलकर दवाई के नए उपयोग जोड़े जा सकें। उनके मुताबिक ये अध्ययन दवाई की बिक्री बढ़ाने के मकसद से नहीं किए जाते। मगर डॉक्टरों को इनकी जानकारी देना बिक्री बढ़ाने का प्रयास ही है।

उपरोक्त मामले से स्पष्ट है कि दवा कंपनियों द्वारा इन छोटे-छोटे अध्ययनों के नतीजों का उपयोग व्यापार की दृष्टि से करने के संदर्भ में ज़्यादा कठोर नियमों की ज़रूरत है। वॉशिंग्टन के *सेंटर फॉर साइन्स इन दी पब्लिक इंटरेस्ट* का मत है कि दवाई के नए उपयोग बताने वाले शोध पत्रों का वितरण डॉक्टरों को करने के मामले में नियमन की सख्त ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***